RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

सिक्ख साम्राज्य के उदय की परिस्थितियाँ

डॉ0 राजू कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

ईसा की सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में क्षत्रिय कुलोत्पन्न गुरू नानक तथा बाद में गुरू गोविन्द सिंह ने अपना धार्मिक सम्प्रदाय स्थापित किया और जाटों में तथा मुख्यतः सतलज नदी के दक्षिणी भू–भाग में धर्म सुधारार्थ अपने मत का पगचार करने के लिए कुछ शिष्यों को दीक्षित किया। यही 'शिष्य' शब्द आगे चलकर सिक्ख में परिवर्तित हो गया और सिक्खों की एक जाति ही बन गयी और बाद में सिंधु के मैदान से कराकुरम पहाड़ियों तक एवं दिल्ली से पेशावर तक समूचा भू–भाग उनके प्रभाव क्षेत्र में आ गया। इस प्रकार 28^0 उत्तरी अक्षांश से लेकर 36^0 उत्तरी अक्षांश तक तथा 71^0 पूर्वी देशान्तर रेखा से लेकर 77^0 पूर्वी देशान्तर रेखा के बीच का क्षेत्र उनके प्रभाव क्षेत्र में आ गया था और यदि पानीपत से खैबरदर्रा तक एक आधार खींच दिया जाए तो इसकी लम्बाई 450 मील होगी, जिस पर दो प्रायः अनुरूप त्रिभुज बनेंगे और महाराजा रणजीतसिंह द्वारा जीते गये एवं सिक्खों का निजी प्रदेश इन्हीं त्रिभुजों के अन्तर्गत आ जायेंगे।

रणजीतसिंह के उद्‌भव एवं सत्ता स्थापित करने के विषय में चर्चा करने से पूर्व गुरू नानक और गुरू गोविन्दसिंह के बारे में संक्षिप्त जानकारी करना समीचीन होगा। नानक का जन्म 1469 ई. में लाहौर से 15 मील दक्षिण में कनकाच में हुआ था। वे अपने नाना के घर पैदा हुए थे। ननिहाल में जन्म लेने वाले लड़के को नानक कहा जाता था। नानक के पिता संभवतः गल्ले के व्यापारी थे। उनकी बहन भी एक गल्ले के व्यापारी को ब्याही गई थी। बहनोई की मदद करने अथवा काम सीखने के लिए बचपन से ही नानक अपनी बहन के यहाँ रहते थे। उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए अध्ययन एवं लोगों से विचार–विमर्श को माध्यम बनाया। इसके लिए दूर–दूर की यात्राएँ की और वे शायद भारत से बाहर भी गये। नानक मानव के संघर्षमय जीवन को सुखमय बनाना चाहते थे, उसी के साधन की खोज में वे निरन्तर भ्रमाण, अध्ययन और ज्ञान चर्चा में लगे रहते थे। लंबे समय तक शांति–पथ की खोज में रहने पर भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। अन्ततः उन्होंने कहा 'सब गलती पर हैं, मैंने कुरान पढ़ा, पुराण पढ़ा पर परमात्मा को कहीं भी नहीं पाया' आदि ग्रंथ में उपरोक्त मन्तव्य के पद भरे पड़े हैं। रतनमाला में नानक ने कहा है ''आदमी वेद पढ़ सकता है, कुरान का पाठ कर सकता है, इन सबके द्वारा अस्थाई आनन्द भी प्राप्त कर सकता है, किन्तु परमेश्वर की कृपा के बिना मुक्ति असंभव है।' वे अपने देश को लौट आये। साधु का बाना उतार फेंका और शेष जीवन में उन्होंने यही उपदेश दिया कि 'उसी एक की पूजा करो जो अदृश्य है, पवित्र जीवन बिताओ और दूसरों की त्रुटियों के प्रति सहिष्णु बनो।' उनका नम्र व्यवहार, सच्ची पवित्रता और लोगों को सत्पथ पर ले जाने वाली गंभीर वाणी सदैव प्रशंसनीय रही। सत्तर वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई और उस समय तक उनके बहुत से शिष्य हो गये थे। गुरूनानक यद्यपि इस्लाम से प्रभावित थे किन्तु स्मिथ का यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता कि इस्लाम के कट्‌टर विरोधी होती हुए भी एकेश्वरवाद जाति प्रथा से पृथकता और अन्य आदर्श इस्लाम धर्म से ग्रहण किये। एकेश्वरवाद की धारणा ऋग्वेद एवं उपनिषदों में और भेद रहित समाज की परिकल्पना का विकास इस्लाम से बहुत पहले बौद्ध धर्म द्वारा भारत में किया जा चुका था। वस्तुतः सिक्ख धर्म का विकास हिन्दू–मुस्लिम धार्मिक रूढ़िवादिता से हटकर मानव जाति के कल्याण एवं शान्ति पथ पर अग्रसर करने के लिए हुआ। विशेषरूप से हिन्दू समुदाय नानक के विचारों से प्रभावित हुआ और उनकी शिक्षाओं को अपनाया। उनके शिष्यों ने इसको आगे जाकर मुसलिम नियंत्रण से मुक्ति का साधन माना।

मुगल शासन ने गुरू नानक की शिक्षाओं को इस्लाम विरोधी माना था। औरंगजेब ने गुरू तेगबहादुर एवं मुस्लिम संत आदम हाफीज को मुसलिम बागियों को शरण दिये जाने के अपराधों में बन्दी बना लिया। आदम हाफिज को देश से बाहर निकाले जाने की सजा दी गई और तेगबहादुर को 1675 ई. में प्राणदण्ड दिया गया। तेगबहादुर के पुत्र एवं उनके उत्तराधिकारी दसवें गुरू गोविन्द पर इस निर्मम कृत्य से भारी आघात पहुँचा। उन्होंने सिक्खों को सैन्य रूप में संगठित करने का निश्चय किया। सिक्खों को एकता के सूत्र में आबद्ध करने हेतु 1699 ई. में व्यक्तिगत गुरूत्व का सिद्धान्त समाप्त करके 'खालसा' प्रजाधिपत्य की स्थापना की। उसी समय केश, कंघा, किरपान, कड़ा एवं कच्छा को सिक्खों की विशिष्ट वेशभूषा के रूप में स्वीकार किया। गुरू गोविंद के प्रयासों से सिक्खों में अपने अस्तित्व को बनाये रखने का भाव जागृत हुआ।

'खालस' या 'खालीस' अरबी भाषा का शब्द है जिसका प्रयोग 'शुद्ध', 'विशेष' आदि अर्थों में होता है। इस प्रकार खालस शब्द 'गोविन्द जी के राज्य' को अर्थ दे सकता है या इससे तात्पर्य यह लिया जा सकता है कि सिक्ख ईश्वर द्वारा चुनी हुई जाति

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

है। गुरू गोविंद को एक पठान के पुत्रों ने 1708 में गोदावरी नदी के तट पर स्थित नंदेर में मार दिया था। मृत्यु के समय शिष्यों ने उनके उत्तराधिकारी के बारे में पूछा। गोविन्द जी ने उन्हें सदैव प्रसन्न रहने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'वे खालसा को ईश्वर की रक्षा में अर्पित किये जा रहे हैं जो अमर और अविनाशी है। जो गुरू को देखना चाहता है, वह नानक जी के ग्रंथ में उन्हें ढूंढ़े। गुरूजी खालस के साथ ही रहेंगे, दृढ़ रहो और श्रद्धा रखों, जहाँ पाँच सिक्ख एकत्रित होंगे, वहाँ मैं भी उपस्थित रहूँगा।'

गुरू गोविन्द सिंह का एक शिष्य दक्षिण भारत का निवासी बैरागी सम्प्रदाय का साधु बन्दा था जिसके नेतृत्व में 1708 से 1716 ई. में स्वतंत्रता के लिए सिक्ख संघर्ष चलता रहा। 1716 में उसे कैद कर अपमानजनक ढंग से दिल्ली लाया गया। अपने हाथों से स्वयं के बेटे की हत्या करने के लिए उसे बाध्य किया तथा बाद में गर्म लोहे की सलाखों से उसकी हत्या कर दी गई। खालसा जो एक सामरिक शक्ति बन गई थी, मुगलों की दमन नीति उसे नष्ट नहीं कर सकी अपितु दिल्ली सरकार की बढ़ती हुई कमजोरी ने सिक्ख संगठन को शक्ति प्रदान की। 1739 ई. में नादिरशाह आक्रमण और पहले तीन अब्दाली हमलों (1748–52 ई.) ने पंजाब पर मुगल आधिपत्य लगभग समाप्त कर दिया था। इस दौरान (1745 ई. के लगभग) पंजाब के सिक्खों ने 100–100 व्यक्तियों के छोटे–छोटे दल में अपने में एक नेता के नेतृत्व में संगठित कर लिया। मार्च 1748 ई. में विभिन्न दलों ने मिल कर 'दल खालसा' संगठन की नींव रखी। दल खालसा में कुल 12 जत्थे (मिसलें) थे। बारह मिसलें इस प्रकार थी : भांगी (भांग पीसने वाले), निशानिया (शहीद या योद्धा के वंशज), रामगढ़िया (रामगढ़ के), नक्कई (नकाई स्थान के), अहलुवालिया (एक गाँव जहाँ खालसा ने घोषणा की), घनई या कन्हेया, करोड़ासिंहिया, सकरचकिया (सुकेरचुकिया–यह सरदारों का गाँव था), दल्लेहवाला (दलेवालिया–सरदों का गाँव), फीजुलपुरिया (फैजुल्लापुरिया या सिंह पुरिया) एवं फुलकिया। इन मिसलों के नेताओं की एक समिति होती थी जो समस्त दलों के कार्यों पर नियंत्रण रखती थी। इनके मध्य एकता का सूत्र अमृतसर में आयोजित होने वाला वार्षिक सम्मेलन 'सरबत खालसा' था। इसके अतिरिक्त मिसलों के सरदार भी साल में एक बार मिलते थे जिसे 'गुरू मथ्था' (गुरूमता) कहते थे।

'दल खालसा' की स्थापना सिक्खों के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी। गुरू गोविन्द सिंह द्वारा दल खालसा की स्थापना सिक्खों के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी। इस प्रकार 'यह धार्मिक आन्दोलन से पृथक धर्म बन गया और एक पृथक फिरके से सम्प्रदाय में परिणम हो गया और एक 'स्वान्तः सुखायं' निर्वाण प्राप्ति के धार्मिक विचारों से बदलता–बदलता यह एक सामाजिक व राजनीतिक आन्दोलन का रूप ग्रहण कर गया।' प्रत्येक सिक्ख अपने नेता की आज्ञा का पालन करना धर्म मानता था। इस व्यवस्था ने सिक्खों को संगठित तथा अनुशासित बनाए रखा। किन्तु विभिन्न मिसलों में एकता का अभाव था और उनमें परस्पर संघर्ष चला करते थे। इनमें पांच मिसलें ही शक्तिशाली थी : सुकरचकिया, कन्हेया, नकाई, अहलुवालिया व भांगी। इनमें भांगी सबसे शक्तिशाली थे। उनका अमृतसर, लाहौर, पश्चिमी पंजाब के कुछ इलाकों पर अधिकार था।

कांगड़ा शासक संसारचन्द्र सिक्खों की आपसी फूट का लाभ उठाना चाहता था। वह अफगानिस्तान के शाह की मदद लेकर अपने प्रभाव में वृद्धि करने का इच्छुक था। नेपाल के गुरखे अपनी सीमा का विस्तार कर रहे थे तथा उनकी टक्कर संसारचन्द्र से होती रहती थी। दूसरी ओर अंगरेज एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहे थे। 1771 ई. में जब महादजी सिंधिया ने दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित किया उस समय तक पंजाब में सिक्ख दृढ़तापूर्वक अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुके थे। 1763–69 के मध्यम अहमदशाह अब्दाली ने कई बार पंजाब पर आक्रमण किए किन्तु संगठित सिक्ख शक्ति के समक्ष हर एक अभियान की सफलता उत्तरोत्तर कम होती गई। हरबंससिंह ने जिक्र किया है कि 16 अप्रैल 1765 को सिक्ख पंजाब के मालिक हो गये थे और गुरू के सम्मान में इस अवसर पर सिक्के भी जारी किये। जहाँ पंजाब का कृषक वर्ग विदेशी आक्रान्ताओं एवं मुगल अत्याचारों से बचने के लिए सिक्ख सम्प्रदाय की ओर आकृष्ण हुआ, वहीं दल खालसा में 1753 ई. में प्रारम्भ हुई राखी प्रथा ने इसकी वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ किया। राखी प्रथा के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव से उपज का 1/5 भाग लेकर दल खालसा उसकी सुरक्षा दायित्व स्वीकार करता था। इस पद्धति से सिक्खों की स्वतंत्र सुरक्षा व्यवस्था एवं राजस्व प्रबंध का विकास हुआ और यह तथ्य सिक्खों के राजनीतिक अधिकारों का आधार बना।

रणजीतसिंह के उत्कर्ष के समय भारत की राजनीतिक परिस्थितियाँ काफी जटिल थी। अंगरेजों की महत्त्वाकांक्षाओं एवं अफगानिस्तान के शासक जमानशाह (तैमूरशाह के बाद अहमदशाह अब्दाली का पोता–जमानशाह 1793 ई. में काबुल का शासक बना) के आक्रमणों के बढ़ते खतरे को देखते हुए रणजीतसिंह का उद्‌भव अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। कहा भी है कि ऐसे समय जबकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में तेजी से फैल रहा था, वे अपनी–अपनी शक्ति बढ़ाने की नीति बरतने लगे। सामन्तवाद का नाश कर सिक्खों का एक राष्ट्रीय राजतंत्र के रूप में संगठित करना रणजीतसिंह नामक एक भाग्यशाली व्यक्ति का काम था।

गुरू नानक एवं गुरू गोविन्दसिंह के धार्मिक विचारों ने सिक्खों को एकता के सूत्र में आबद्ध करने में एक आवश्यक शक्ति का कार्य किया। वहीं उनका विभिन्न दलों में संगठन और समस्त दलों का 'दल खालसा' के रूप में गठन उनमें पारस्परिक मैत्री एवं एकता का कारण बना और दल खालसा द्वारा प्रारंभ की गई राखी या राजस्व व्यवस्था ने इस शक्ति को एक

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

राजनीतिक सत्ता में बदल दिया। तथापि विविध दलों के आपसी कलह एवं तत्परिणामस्वरूप पंजाब में अशान्ति और अव्यवस्था बनी रही। इस अराजकता की स्थिति में ऐसे नेतृत्व की अपेक्षा की जाने लगी जो समस्त दलों में एकता ला सके एवं अव्यवस्था को समाप्त कर सम्पूर्ण क्षेत्र में शान्ति स्थापित करे। दूसरे शब्दों में, परस्पर मिसलों के विवार एवं गृहकलह ने रणजीतसिंह के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया। डॉ. हरीराम गुप्ता का यह कथन उचित ही है कि 'लूटमार की यह पद्धति सिक्खों के राजतंत्र के विकास के लिए एक आवश्यक संक्रमण की भांति थी।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मूर क्रोफ्ट डब्लू, ट्रेवेल्स इन हिमालयन प्रोविन्सेज ऑव हिन्दुस्तान एण्ड पंजाब, भाग–2, पृ. 338।
2. चौपड़ा, पंजाब एज ए सावरिन स्टेट, पृ. 45।
3. हरिराम गुप्ता, पंजाब ऑव द इव ऑव द सिक्ख वार, पृ. 90।
4. गौफ एण्ड इन्स, द सिक्ख सिक्सवार्स, पृ. 138
5. रॉबर्ट्स पी.ई., ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास, पृ. 258।
6. बेल इवान्स, अनेक्सेसन ऑव द पंजाब, 1822।
7. ट्राटर एल. जे., हिस्ट्री ऑव द ब्रिटिश इम्पायर इन इण्डिया, जि. 1, पृ. 186।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)